अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा-चिन्तन की मासिक पत्रिका

वर्ष : 51 अंक : 10 कार्तिक-मार्गशीर्ष वि.सं. 2081 नवम्बर, 2024 पृष्ठ-28 **RNI 43602/77 ISSN No.2581-981x**

समिति में गांधी जयंती : बापू की आत्मीय याद

गांधी जयंती पर 2 अक्टूबर को राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति में बापू के विचारों की बयार बही।

समिति के औषधि वन में जामुन के घने पेड़ों की छांव में प्रार्थनसभा हुई जिसमें बापू के प्रिय भजन गाए गये। संगीत गुरु पंडित राजेन्द्र जडेजा ने विशेष तौर पर पधार कर अपने प्रस्तुतियों से प्रार्थना सभा को गरिमा प्रदान की। उनके साथ उनकी शिष्या मधु नायक के साथ समिति की संयुक्त सचिव नीलम अग्रवाल तथा संगीत रसिक संजीव जैन ने भी गांधी के प्रिय भजन गाये।

प्रार्थना सभा के मुख्य अतिथि वरिष्ठ गांधीवादी चिंतक और पत्रकार प्रवीणचंद्र छाबड़ा थे।

इस अवसर पर थियेटर शिक्षक मूमल सिंह, पश्चिमी संगीत में निष्णात गौतम गुप्ता के साथ अनेक युवा गांधी को श्रद्धा सुमन अर्पित करने के लिये मौजूद थे।

बाद में समिति सभागार में महान जापानी फिल्मकार अकीरा कुरोसावा की युद्ध की त्रासदी और उसकी निरर्थकता तथा सादगी वाला सहज जीवन की प्रेरणा देती और मानव चेतन को जगाने वाली क्लासिक फिल्म 'ड्रीम्स' का प्रदर्शन किया गया। इससे पहले रिचर्ड एटनबरो की फिल्म 'गांधी' का एक क्लिप भी दिखाया गया जिसमें बापू कहते है कि दुनिया में अनेकों सितमगर आये और एक समय लगा कि वे जीत गये हैं लेकिन अंततः वे सब मिट गये।

इस अवसर पर समिति उद्यान में गांधी की प्रतिमा भी स्थापित की गई। यह प्रतिमा समिति में मूर्तिकला पर हुई एक कार्यशाला में अन्य कृतियों के साथ तैयार की गई थी। ❑

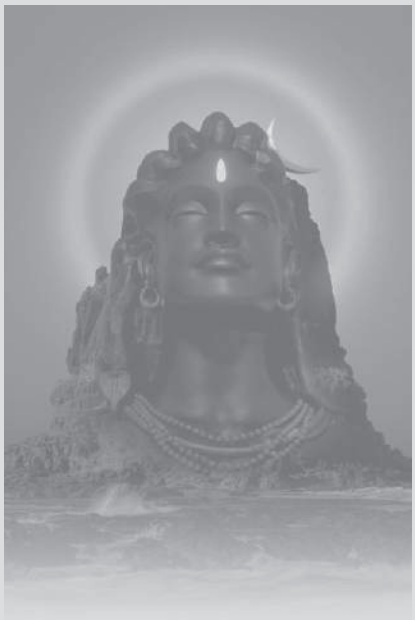

रुचीणाँ वैचित्र्यादृजुकुटिल नाना पथजुषाम्।
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव।।

शिवमहिम्नःस्तौत्रम्

(जिस प्रकार सभी नदियां सीधे, टेढ़े मार्गों से घूम कर समुद्र में मिलती हैं, इसी प्रकार अपनी-अपनी रुचि के अनुसार भिन्न-भिन्न उपासना करते हुए भी सभी मनुष्य परमात्मा को प्राप्त होते हैं)

समानो मन्त्र: समिति: समानी समानं मन: सहचित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये व: समानेन वो हविषा जुहोमि।।
समानी व आकूति: समाना हृदयानि व:।
समानमस्तु वो मनो यथा व: सुसहासति।। ऋग्वेद

अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा-चिन्तन की पत्रिका

वर्ष : 51 अंक : 10 कार्तिक-मार्गशीर्ष वि.सं. 2081 नवम्बर, 2024 मूल्य : पचास रुपये

क्र म

वाणी

3. शिव महिम्न : स्तोत्रम्

संपादकीय

5. अतीत से प्रेम, मगर आज के अनुभव से भविष्य बनाने की शिक्षा हो

लेख

7. इंटरनेट इतना बुरा भी नहीं है!
– प्रोफेसर जेफ जार्विस

11. शिल्प कला में नीति व अन्य शास्त्र-
– श्रीकृष्ण 'जुगनू'

14. **नोबेल पुरस्कार : 2024**

लेख

16. शिक्षा के अधिकार को न मानना संविधान की अवज्ञा
– पानाचंद जैन

18. विकास को आऊटसोर्स करने के खतरे भी होते हैं !
– बिबेकदेव रॉय, संजीव सन्याल, आदित्य सिन्हा

20. लोकतंत्र भावुक तंत्र में बदल रहा है
– कैथरीन डेवरीज

श्रद्धांजलि

21. बीकानेर रंगमंच की शान ओम सैनी नहीं रहे
– ओम थानवी

पुस्तक परिचय

22. प्रशासनिक अधिकारियों को मानवीय बने रहने की सीख देती आत्मकथा

व्याख्यान

24. धर्म समय और युग की सीमा से परे है गीता
– एन.वी.रमण

पर्यावरण

25. सौ रोगों का इलाज करने वाला वृक्ष : शतावरी
– देवेन्द्र भारद्वाज

26. **समिति गतिविधियां**

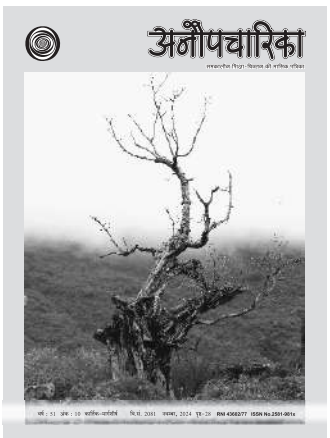

प्रकृति की उदासी
आवरण : राजेन्द्र सिंह शेखावत

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति
7-ए, झालाना डूंगरी संस्थान क्षेत्र,
जयपुर-302004
फोन : 2700559, 2706709, 2707677
ई-मेल : raeajaipur@gmail.com

संरक्षक :
श्रीमती आशा बोथरा
संपादक :
राजेन्द्र बोड़ा
प्रबंध संपादक :
दिलीप शर्मा

अतीत से प्रेम, मगर आज के अनुभव से भविष्य बनाने की शिक्षा हो

उम्र दराज लोगों में अपनी पुरानी यादों से घना मोह होता है। विगत में किए अपने कामों का उनका मोह इतना गहरा होता है कि वे मौजूदा काल के मुद्दों और समस्याओं का हल लुप्त हो चुके पुराने विचारों तथा परम्पराओं से ही करना चाहते हैं। वे अपने विगत से इतने व्यामोहित हुए रहते हैं कि नई सोच और समझ उन्हें न केवल उलझन भरी लगती हैं बल्कि अपनी सांस्कृतिक विरासत को ध्वंस करती भी लगती है। वे फिर-फिर अपने विगत में लौटते हैं और जो कर चुके हैं उसे ही दोहरा कर ही वे अपने अहं की तुष्टि करते हैं। वे ऐसा न करें तो शायद आज की परिस्थितियों में खुद अपने मन में अपनी पहचान न बनाये रखने का दंश झेलते रहें।

विगत से मोह सुख देता है। खास कर उन लोगों को जो वर्तमान में अपने अतीत की हैसियत में जीना चाहते हैं। विगत की स्मृतियों की अपनी सत्ता होती है। अनेक बार वे किसी मनुष्य के अस्तित्व का पर्याय बन जाती हैं। वर्तमान समय में बिल्कुल बदला हुआ समाज है जिसके चारित्रिक और नैतिक व्यवहार हमारे पुरातन शास्त्रीय आदर्शों के विपरीत नज़र आते हैं। यह भी सच है कि भारतीय लोक हमेशा अपना व्यवहार खुद चुनता रहा है भले ही शास्त्र उसके आदर्श रहे हों।

हमें बीते हुए दिन बहुत अच्छे लगते हैं। खुद अपने ही दिन नहीं, पुराना जमाना भी। इसीलिए हर पीढ़ी के बुजुर्गवार यही कहते सुने जाते हैं कि हमारा ज़माना अच्छा था। बीते दिनों की तकलीफ़ों की यादें भी गुदगुदाती है और व्यक्ति उन्हें रस लेकर सुनाता है। शायद इसीलिए इतिहास हमें रिंझाता है। स्मृतियों को वर्तमान में प्रस्तुत करते हुए हर एक का अपना नज़रिया होता है। अनेक बार अतीत की ऐसी घटना स्मृति में अपना स्थान बना लेती है जो संभवतः वैसी हुई नहीं हो परंतु उसके नज़रिए से ऐसी होनी चाहिए थी। इसलिए कई बार ऐसा भी होता है कि एक ही घटना के दो साक्षी जब अपनी बात कहते हैं तो वह एक दूसरे से ध्रुव विरोधी भी हो सकती है। अपनी पुरानी बातों और घटनाओं को याद करते हुए हम अपने मन में फिर जवान हो जाते हैं। इतिहास के पुनर्लेखन के आग्रह के पीछे विगत में हुई घटनाओं की स्मृतियों की हर एक के अपने सत्य के साथ नजदीकी बनाने की भावना ही होती है।

हम अतीत की यात्रा कई रूपों में करते हैं। एक तीर्थ यात्री के रूप में, एक पर्यटक के रूप में, एक रिपोर्टर के रूप में और एक इतिहासकार के रूप में। टीवी चैनलों पर रामायण, महाभारत और गीता से संबन्धित सीरियलों के प्रसारण को देखने वालों के लिए

भी हम कह सकते हैं कि वे विगत की यात्रा पर जाते हैं। क्या असली है और क्या नकली है उसके बीच का अंतर इन सीरियलों को देखने वालों के लिए महत्वपूर्ण नहीं होता। एक प्रकार से इनके दर्शकों का अतीत में लौटना होता है। नए तकनीकी बाज़ार के युग में अनेकों टीवी चैनल अपने दर्शकों को धार्मिक अस्थाओं के आधार पर नए-नए सीरियलों के जरिये दर्शकों को एक तरह से अतीत की तीर्थ यात्राओं पर ही ले जाते हैं। यह भी सच है कि जनसंचार के माध्यम का उपयोग करते हुए बाजार के ये संस्थान एक दूरस्थ अतीत की मुफ्त यात्रा कराने की पेशकश कराने वाले मनोरंजन के लिए व्यक्ति को कुछ समय के लिए सिर्फ मजा देने से अधिक कुछ नहीं करते। इस मजे में अतीत को जानने की कोई जिज्ञासा नहीं होती। सिर्फ प्रथा और अनुष्ठान होता है, खोज और पूछताछ नहीं होती। जब जिज्ञासा नहीं होती तब व्यवहार हावी हो जाता है। बाजार की ताकतों के पास ऐसे नये डिजिटल उपकरण हैं जिनसे वे लोगों को भरमाया कर उनके के व्यवहार को अपने माफिक कर लेते हैं। लोग हमेशा भविष्य के लिए चिंतित रहते हैं और जब वर्तमान में कुछ नहीं कर पाते तो वे अतीत में लौट कर पुरातन को लेकर भविष्य संवारना चाहते हैं।

हर एक का अपना अतीत है जो उसे प्यारा लगता है। उसे इसका कोई मतलब नहीं होता कि वह अतीत कितना सच है। इसलिए हर समुदाय का अतीत स्वर्णिम ही होता है। प्रत्येक स्वर्णिम अतीत का वारिस होना ही पसंद करता है। मुश्किल तब होती है जब वर्तमान को अतीत के सांचे में ढालने का प्रयत्न किया जाता है। इसे विचारधारा का नाम दे दिया जाता है। मगर वे यह भूल जाते हैं कि अतीत को लाकर वे वर्तमान को ध्वंस कर रहे हैं जिससे भविष्य के सुधरने की अपेक्षा कैसे की जा सकती है? ऐसे में रचनात्मक कल्पनाएं मुखर हो उठती है। इससे मिथक बनते हैं जिन पर लोक मुग्ध हुआ रहता है।

इतिहास स्पष्ट रूप से कोई काल्पनिक कथा नहीं होता बल्कि एक ऐसी चीज होती है जो वास्तव हुई थी और जो वर्णन की प्रतीक्षा कर रही होती है। परंतु ऐतिहासिक घटनाक्रम और ऐतिहासिक स्मृति में अंतर होता है। इतिहास के सामाजिक, राजनीतिक और ऐतिहासिक संदर्भ होते हैं जो ऐतिहासिक स्मृतियों से भिन्न होते हैं। ऐतिहासिक स्मृतियों में सांस्कृतिक भाव पक्ष प्रबल होता है। अकादमिक स्तर पर इन भिन्नताओं को समझा जाता है।

मानव के विकास के साथ-साथ उसकी चेतना का विकास भी हुआ है। चेतना अतीत से वर्तमान में विकसित होती रहती है। वह अतीत से कभी न कटते हुए भी नये वर्तमान का सृजन करती है। वह अतीत से बांधती नहीं। ऐसा ज्ञान अतीत के भारतीय मनीषियों को था। इसलिए उन्होंने कभी क्रमबद्ध इतिहास नहीं लिखा। जो सनातन है उसका क्या इतिहास लिखना! हमारी चेतना यह दृष्टि भी देती है कि इतिहास में कभी ठहराव नहीं होता। कुछ छूटता जाता है कुछ जुड़ता जाता है। यही विकास भी है। ठहराया हुआ समाज बौद्धिक दृष्टि से भी सम्पन्न नहीं हो सकता। आज ऐसी शिक्षा की जरूरत महसूस होती है जिसमें इतिहास के विज्ञान को और मिथकों को समझ पाने में मदद मिले। अपने अतीत को जानें, समझें और अब तक जो जान लिया गया है उसे अंतिम सत्य नहीं मान कर ज्ञान की सतत खोज को जारी रखने के लिए शिक्षा हमें तैयार करे।

इंटरनेट इतना बुरा भी नहीं है!

❑

❑

प्रोफेसर जेफ जार्विस

निश्चित रूप से, इंटरनेट की अपनी समस्याएं हैं, लेकिन यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूयॉर्क में एमेरिटस प्रोफेसर जेफ जार्विस इसके फायदे बता रहे हैं। यह आलेख उनकी नवीनतम पुस्तक 'द वेब वी वीव: व्हाई वी मस्ट रीक्लेम द इंटरनेट फ्रॉम मोगल्स,मिसेंथ्रोप्स, एंड मोरल पैनिक', से आंशिक रूप से तैयार किया गया है। ❑सं.

मैं इंटरनेट के बचाव में आया हूं – इसकी कंपनियों नहीं, बल्कि इसकी स्वतंत्रता के – क्योंकि किसी को तो यह करना ही होगा।

इंटरनेट पर कई पाप करने का आरोप लगाया जाता है जो सच भी है मगर इनमें से ज़्यादातर दोष हमारे अपने हैं। क्योंकि इंटरनेट एक मानवीय उद्यम है। कुछ लोग कहते हैं कि इंटरनेट हममें नफ़रत भरता है। नहीं। वास्तव में हम अपने सदियों पुराने पूर्वाग्रहों और डर को अपने साथ ऑनलाइन लेकर आए हैं।

दूसरों का कहना है कि इंटरनेट ने सच्चाई को मार दिया है। लेकिन अच्छे लोग जो खून बहा रहे हैं उनका क्या।

झूठ, नफरत और फरेब दुर्भावना पाले राजनेताओं और बुरे लोगों के बीमार दिमाग से आती हैं किसी एल्गोरिद्म या कृत्रिम बुद्धिमत्ता से स्वतः नहीं आती।

इंटरनेट पर निगरानी वाले पूंजीवाद का आरोप लगाया जाता है। कहा जाता है वह विज्ञापन के लालच के लिए हमें ट्रैक करता है, हम पर निगाह रखता है। जूतों की एक जोड़ी में आपकी रुचि को याद करके आपको उनका विज्ञापन दिखाना कतई निगरानी नहीं है। हम जिस निगरानी व नियंत्रण से डरते हैं वह हमारी ब्राउज़र कुकीज़ नहीं बल्कि शक्तिशाली हथियारों से लैस सत्तावादी शासन हैं।

इंटरनेट के बारे में कहा जाता है कि यह हमारे युवाओं को भ्रष्ट कर रहा है। लेकिन शोध बताते हैं कि आज के युवाओं की परेशानी का कारण उनके स्मार्टफोन को बताना, गहरी समस्याओं से ध्यान भटकाने का एक आसान तरीका है। यह गहरी समस्याएं हैं: शैक्षणिक और सामाजिक दबाव, जलवायु परिवर्तन, आर्थिक कमज़ोरी और, संयुक्त राज्य अमेरिका में, स्कूल में गोलीबारी और सुप्रीम कोर्ट द्वारा महिलाओं से उनके शरीर पर से नियंत्रण